संभाषण कला

संभाषण - चर्चा , वार्तालाप , किसी लिखित या अलिखित चिंताओ पर सचेत भाषण , किसी के विचारों को उजागर करने के लिये ।

संभाषण कला - साक्षात्कार में वार्तालाप तथा संभाषण का अपना महत्व है , प्रत्याशी अपने वार्तालाप के ढंग से प्रभावित कर सकता है । उसकी वार्ता का ढंग साक्षात्कार पर अपना विशिष्ट प्रभाव छोड़ता है , अतः अभ्यर्थी को वार्तालाप की कला पर विशेष ध्यान देना चाहिए । कभी-कभी यह धारणा रखकर कि अंग्रेजी में की गई वार्ता का विशेष प्रभाव पड़ता है , मातृभाषा में बोलने में हीनता की भावना का अनुभव होने लगता है , ऐसा बिल्कुल भी नहीं होना चाहिये । प्रश्न भाषा का नहीं है , बातचीत करने का ढंग अधिक महत्व रखता है । यदि आवश्यकता पड़ने पर अथवा अंग्रेजी में प्रश्न किये जाने पर आपको अंग्रेजी में वार्ता करनी हो तो आपको अंग्रेजी बोलने का अभ्यास भी होना आवश्यक है । अन्यथा अपनी मातृभाषा में ही अपने उत्तर दें । भाषा कोई भी हो आपको प्रभाव उत्पन्न करने के लिए कुछ गुण अवश्य ही विकसित करने होंगे । यदि अंग्रेजी अनिवार्य न हो तो अपनी मातृभाषा का प्रयोग साक्षात्कार में करें , यदि प्रश्न मातृभाषा में किये जा रहे हो तो अंग्रेजी में उत्तर देने का कोई औचित्य नहीं है । वास्तविकता यह है कि आप अपनी भाषा में ही स्वाभाविकता ला सकते हैं ।